32.0 उर्दू में भगवान राम

● डॉ सय्यद मुबीन ज़ेहरा, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, ए.आर.एस.डी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।
Email- drsyedmubinzehra@gmail.com

शोध-सार

मर्यादा पुरषोत्तम श्री राम भारत की पहचान हैं. ऐसा नहीं है कि भारत में केवल हिंदू ही उन्हें मानते हों. श्री राम जी की पूजा अर्चना को लेकर जिस प्रकार हिन्दू उन्हें अपनाते हैं दुसरे धर्मों में चाहे उनको उस प्रकार पूजा न जाता हो लेकिन उनका व्यक्तिव, उनकी शिक्षा, उनकी जीवणी तथा उनका जीवन दर्शन सभी धर्मों के मानने वालों को सदा प्रभावित करता आया है. हिन्दू धर्म से सम्बंधित जो पुस्तकें उर्दू में सर्वाधिक प्रकाशित हुई हैं उन में रामायण और भगवद्गीता सब से ऊपर हैं. जिस प्रकार हिन्दू कवि या लेखक मुहम्मद साहब, हज़रत अली, हज़रत इमाम हुसैन, और दुसरे मुस्लिम सूफ़ी संतों पर लिखते रहे हैं वैसे ही हिन्दू देवी देवताओं पर लिखने वाले मुस्लिम विद्वानों, कवियों और लेखकों की भी कमी नहीं है. अकबर के समय में पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक संस्था "दारुल तर्जुमा" के द्वारा बाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण के अनुवाद किए गए थे। अब्दुल क़ादिर बदायूंनी की "मुन्तख़ाबुल तवारीख़" में इस प्रकार के कई अनुवादों की चर्चा की गई है। जहांगीर के समय में भी ऐसे कुछ अनुवाद हुए थे जिन में सादुल्लाह मसीह की लिखी "रामायणे मसीही" भी शामिल है. इस शोधपत्र में उर्दू में रामायण के विभिन्न ग्रंथों पर चर्चा की गयी है.

कुंजी शब्द- राम, कृष्ण, उर्दू, रामायण, रामचरित मानस, मुस्लिम, शायर

मर्यादा पुरषोत्तम श्री राम भारत की पहचान हैं. ऐसा नहीं है कि भारत में केवल हिंदू ही उन्हें मानते हों. श्री राम जी की पूजा अर्चना को लेकर जिस प्रकार हिन्दू उन्हें अपनाते हैं दुसरे धर्मों में चाहे उनको उस प्रकार पूजा न जाता हो लेकिन उनका व्यक्तिव, उनकी शिक्षा, उनकी जीवणी तथा उनका जीवन दर्शन सभी धर्मों के मानने वालों को सदा प्रभावित करता आया है.

यह भारत की मिटटी की तासीर है कि यहाँ दूसरे धर्मों के पवित्र तथा पूजनीय देवी देवताओं पर लोग सदा लिखते रहे हैं. प्रोफ़ेसर मुज़फ्फ़र हनफ़ी अपनी पुस्तक "हिन्दुस्तान उर्दू में" लिखते हैं कि "हिन्दू धर्म से सम्बंधित जो पुस्तकें उर्दू में सर्वाधिक प्रकाशित हुई हैं उन में रामायण और भगवद्गीता सब से ऊपर हैं." जिस प्रकार हिन्दू कवि या लेखक मुहम्मद साहब, हज़रत अली, हज़रत इमाम हुसैन तथा दुसरे मुस्लिम सूफ़ी संतों पर लिखते रहे हैं वैसे ही हिन्दू देवी देवताओं पर लिखने वाले मुस्लिम विद्वानों, कवियों और लेखकों की भी कमी नहीं है. इन में ऐसे ऐसे कवि या लेखक भी हैं जो इस्लाम धर्म में मौलवी या मौलाना तक की उपाधि रखते हैं. मौलाना हसरत मोहानी के श्री कृष्ण के बारे में कहे इस शेर को कौन भूल सकता है;

हसरत की भी क़ुबूल हो मथुरा में हाज़िरी
सुनते हैं आशिक़ों पे तुम्हारा करम है ख़ास

इतिहास पर अगर नज़र डालें तो मुग़ल काल में रामचरित मानस का संस्कृत से फ़ारसी तथा उर्दू में अनुवाद मिलता है। अकबर को ही देखें तो जहां वह एक तरफ़ "दीने इलाही" को लेकर सभी धर्मों को एक मंच पर लाना चाहता था तो वहीं दूसरी ओर दूसरे धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद करवा कर उन पर चर्चा करना भी उसे पसंद था. यही कारण है कि अकबर के समय में पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक संस्था "दारुल तर्जुमा" भी स्थापित की गई थी जिस के द्वारा बाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण के अनुवाद किए गए थे। अब्दुल क़ादिर बदायूंनी की "मुन्तख़ाबुल तवारीख़" में इस प्रकार के कई अनुवादों की चर्चा की गई है। जहांगीर के समय में भी ऐसे कुछ अनुवाद हुए थे जिन में सादुल्लाह मसीह की लिखी "रामायणे मसीही" भी शामिल है.

न्यूज़18 उर्दू की सितंबर 2015 की एक रिपोर्ट में इलाहबाद संग्रहालय में इसकी प्रदर्शनी का उल्लेख किया गया है. उर्दू में राम कथाओं और रामायण को उर्दू पढ़ने वालों तक पहुँचाने में साहित्यकारों, कवियों तथा प्रकाशकों ने बड़ी भूमिका निभाई है। इसका एक कारण यह भी है कि उस समय फ़ारसी तथा उर्दू भाषा प्रशासनिक रूप से महत्वपूर्ण थी और इसे हिन्दू मुसलमान सभी

समझते, बोलते और पढ़ते लिखते थे। आज भी देश के कई भागों में दशहरा के समय उर्दू की रामायण पढ़ी जाती है जो उर्दू काव्य रूप में लिखी गई है। जब हम उर्दू प्रकाशकों की बात करते हैं तो उर्दू में एक बड़ा नाम मुंशी नवल किशोर का आता है. उन्हों ने रामायण के अनगिनत संस्करण प्रकाशित करने का काम किया। "मतबा नवल किशोर" के नाम से प्रसिद्ध उनकी प्रेस ने 1860 में रामचरित मानस का उर्दू में प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था।1894 में बाल्मीकि रामायण का ज्ञानी परमेशर दयाल के द्वारा अनुवादित संस्करण प्रकाशित हुआ था। गद्य में किए गए इस अनुवाद को बाद में पध में द्वारका प्रशाद उफ़ुक़ लखनवी ने 1921 में "मुकम्मल रामायण बाल्मीकि" के शीर्षक से लिखने का काम किया।1870 में शंकर दयाल फ़रहत का "अद्भुत रामायण" शीर्षक से किया गया अनुवाद भी सामने आया जिस ने घर घर में रामायण को पहुंचाने का काम किया.

मुज़फ़्फ़र हनफ़ी ने अपनी पुस्तक "हिन्दुस्तान उर्दू में" में ऐसी ही 15 रामायण की चर्चा की है जिन का काव्यात्मक अनुवाद किया गया है। उनका कहना है कि अगर गध का अनुवाद किया जाए तो वह इतना कठिन नहीं होता है लेकिन अगर किसी अनुवाद को कविता का रूप दिया जाए तो वह कठिन होता है। प्रोफ़ेसोर मुज़फ़्फ़र हनफ़ी ने ऐसे 15 अनुवादों को उनके प्रकाशन के वर्ष के आनुसार क्रमबद्ध किया है।

1. रामायण नज़्म उर्दू - शंकर दयाल फ़र्हत - 1866
2. अद्भुत रामायण - शंकर दयाल फ़र्हत - 1870
3. तुलसीकृत रामायण (सचित्र) - बांके बिहारी लाल बहार - 1886
4. तुलसीकृत रामायण - शंकर दयाल फ़र्हत - 1886
5. रामायणे मेहर - सूरज नारायण मेहर - 1914
6. तुलसीकृत रामायण ख़ुशतर - जगन नाथ ख़ुशतर – 1925
7. रामायण यक क़ाफ़िया मंज़ूम उफ़ुक़ - द्वारका प्रशाद उफ़ुक़ लखनवी
8. रामायण (बा तर्ज़े नौटंकी) - हरी नारायण शर्मा साहिर
9. मंज़ूम रामायण - नफ़ीस ख़लीली
10. रामायण तुलसीकृत असल मय मंज़ूम तर्जुमा - सूरज प्रशाद तसव्वुर
11. मुसद्दस रामायण - बनवारी लाल शोला
12. राम कहानी - नफ़ीस ख़लीली
13. राम गीता – शिव प्रशाद राहुल
14. राम लीला - मुंशी राम सहाय तमन्ना
15. रामायण - मह्दी नज़मी

एक आंकलन के अनुसार रामयण के उर्दू अनुवादों की संख्या 300 से भी अधिक हो सकती है. रामपूर रज़ा लाइब्रेरी में रामायण की विभिन्न दुर्लभ पांडुलिपियाँ मोजूद हैं. हिन्दुस्तान एक्सप्रेस उर्दू के मार्च 2023 के एक समाचार में इनकी प्रदर्शनी की चर्चा की गयी है. इसके अनुसार प्रदर्शनी में फ़र्रुख़ सीर द्वारा बाल्मीकि रामायण का संस्कृत से फ़ारसी में कराया गया अनुवाद भी शामिल था. जिसको समीर चंद ने संस्कृत से फ़ारसी में लिखा था। प्रदर्शनी में फ़िराक़ी दरियाबादी की "रामायण फ़िराक़ी", राम संभली की "रामायण मुसद्दस मुसव्विर (उर्दू नस्तालीक़ में सचित्र), शाह मुअज़्ज़म बहादुर की हुकूमत में लिखी गई राय अमर सिंह की "रामायण", घासी राम की "राम लीला (उर्दू), अहमद ख़ां ग़फ़लत की "क़िस्सा राम-ओ-सीता" (उर्दू), मौलवी अब्दुल सत्तार की "रामायण" के कुछ दृश्य, प्रेम पाल अश्क की "रामायण मंज़ूम मुसव्विर" (सचित्र काव्य) मुल्ला मसीही पानीपती की "मंज़ूम रामायण" और "अध्यात्म रामायण" आदि जैसी कई दुर्लभ पाण्डुलिपि दर्शाई गयी थीं. रामायण पर शोधार्थियों के लिए रामपुर रज़ा लाइब्रेरी इस विषय पर दस्तक का पहला दरवाज़ा हो सकता है.

DW की अक्टूबर 2017 की एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के शहर बीकानेर में हर बरस दीवाली के अवसर पर रामायण उर्दू में पढ़ी जाती है। ये रामायण मौलवी बादशाह हुसैन राना लखनवी ने सन 1935 में लिखी थी। इस में बनवास से श्री राम के आने को देखिये किस शानदार रूप से दर्शाया गया है.

अलग़र्ज़ चौदह बरस के बाद सारा क़ाफ़िला
काम सारे कर चुका और राजधानी को चला
अपने अपने फ़र्ज़ को हर एक ने पूरा किया
हो गया बन बास की सब आफ़तों का ख़ात्मा
रास्त बाज़ी जां ख़ुशी की फिर कहानी बन गई
नए सिरे से फिर अयोध्या राजधानी बन गई

न्यूज़ ऐज इस्लाम की 31 दिसंबर 2023 की एक और रिपोर्ट के अनुसार 2006 में राजस्थान सेकंड्री बोर्ड आफ़ एजूकेशन ने उर्दू रामायण को बारहवीं के कोर्स में रखने का ऐलान किया था. इस रिपोर्ट के अनुसार "मौलवी बादशाह हुसैन ख़ान राना लखनवी उत्तरप्रदेश के संडीला से आकर बीकानेर में बसे थे। वो उर्दू और फ़ारसी के उस्ताद और शायर भी थे। उनके एक कश्मीरी पण्डित शागिर्द ने उन्हें बताया कि बनारस हिंदू यूनीवर्सिटी में तुलसी दास जयंती के अवसर पर मंज़ूम रामायण का मुक़ाबला रखा गया है। इसलिए आप रामायण को मंज़ूम (काव्य) रूप में प्रस्तुत करें। रिपोर्ट के अनुसार मौलवी राना लखनवी ने कहा कि चूँकि उन्होंने रामायण पढ़ी नहीं है इसलिए ये मुम्किन नहीं। जिस पर कश्मीरी पण्डित शागिर्द ने मौलवी राना लखनवी से कहा कि अगर आप चाहें तो मैं हर दिन आपको रामायण पढ़ कर सुनाउंगा। जिस पर मौलवी राना लखनवी राज़ी हो गए। हर रोज़ उनका शागिर्द उन्हें रामायण सुनाता था और वो सुनने के साथ लिखते भी जाते थे। रामायण पूरी हो जाने के कुछ दिनों बाद मौलवी राना लखनवी ने मंज़ूम उर्दू रामायण पेश कर दी। जिसके बाद शागिर्द ने उसे बनारस डाक से भेज दिया। कुछ दिनों बाद ख़बर मिली कि मौलवी राना लखनवी की मंज़ूम उर्दू रामायण को गोल्ड मैडल देने की घोषणा हुई है. उन्हें ये गोल्ड मैडल मशहूर कश्मीरी पण्डित विद्वान सर तेज बहादुर सप्रू ने बीकानेर में स्वयं आकर दिया था. इस रामायण में लंका दहन को किस प्रकार सीता जी के श्राप से जोड़ा गया वह देखें;

रंजो हसरत की घटा सीता के दिल पे छा गई
गोया जूही की कली थी ओस से मुरझा गई
देखने को ज़ाहिरन हनूमान जी की चल गई
वर्ना सीता की ही आहें थीं कि लंका जल गई

अक्टूबर 2015 की बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली से लगे फ़रीदाबाद में भी उर्दू में रामायण प्रस्तुत की जाती रही है. रिपोर्ट के अनुसार रामायण की ये उर्दू लिपि भारत के बटवारे के समय पाकिस्तानी पंजाब से उत्तरी भारत पहुंची थी. जसवंत सिंह तोहान्वी और पंडित राधे शाम ने उर्दू में ही रामायण लिखी थी जो इनके पास है और इसे दशहरे में प्रस्तुत करते हैं.

उर्दू में जब रामायण के इतने अनुवाद मिलते रहे हों तो फिर उर्दू के कवि, लेखक और बुद्धिजीवी राम के वजूद से कैसे अछूते रह सकते थे. इन में एक बड़ा नाम अल्लामा इक़बाल का है जिनको पाकिस्तान के लोग अपना बौद्धिक मार्गदर्शक और दार्शनिक मानने से भी नहीं चूकते हैं. क्योंकि उनको लगता है कि इक़बाल इस्लाम के आधारभूत दर्शन पर शायरी करते हैं. उनकी एक पूरी कविता है जिस में वह भगवान् राम के व्यक्तित्व की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उनको इमामे हिन्द कहते हैं. इमाम का अर्थ होता है जो सब से आगे रह कर मार्गदर्शन करे. अपनी कविता में इक़बाल कहते हैं;

लबरेज़ है शराब-ए-हक़ीक़त से जाम-ए-हिंद
सब फ़लसफ़ी हैं ख़ित्ता-ए-मग़रिब के राम-ए-हिंद
ये हिन्दियों की फ़िक्र-ए-फ़लक-रस का है असर
रिफ़अत में आसमाँ से भी ऊँचा है बाम-ए-हिंद
इस देस में हुए हैं हज़ारों मलक-सरिश्त
मशहूर जिन के दम से है दुनिया में नाम-ए-हिंद
है राम के वजूद पे हिन्दोस्ताँ को नाज़
अहल-ए-नज़र समझते हैं इस को इमाम-ए-हिंद

एजाज़ इस चराग़-ए-हिदायत का है यही
रौशन-तर-अज़-सहर है ज़माने में शाम-ए-हिंद
तलवार का धनी था शुजाअ 'त में फ़र्द था
पाकीज़गी में जोश-ए-मोहब्बत में फ़र्द था।

श्री राम को लेकर उर्दू में आज भी बहुत शायरी की जा रही है. इस लेख को बीते कल तक ही सीमित रखते हुए उर्दू की कुछ क्लासिकल रामायण से शायरी के नमूने नीचे दिए जा रहे हैं. क्योंकि उर्दू में रामयण की संख्या सेकड़ों में हो सकती है इस लिए सब तक पहुंचना इस छोटे से लेख में मुमकिन नहीं हो पाया है. इस लेख को कोई आगे बढ़ायेगा तो मुझे ख़ुशी होगी. इन्टरनेट ने जीवन बहुत आसान कर दिया है. उर्दू में रामायण के बहुत से लिंक आदि इन्टरनेट पर भी मिलते हैं.

पिदर के सामने आए शताबां
ज़े बस हाल-ए-पिदर देखा परेशां
ज़मीं पर इस तरह था शाह का हाल
हुमा ग़लतां है गोया बे पर-ओ-बाल
कहा तब राम ने बा अश्कबारी
कि है किस वास्ते ये सोगवारी
जो हो तक़सीर मेरी वो अता हो
बजा लाऊँ जो साहिब की रज़ा हो
(मुंशी जगन्नाथ ख़ुशतर)

जनाबे जानकी ने जब सुना हाल
तो जोशे गिरया से आँखें हुईं लाल
ना था ज़ब्ते शकेबाई का यारा
हुई शौहर की फ़ुर्क़त नागवारा
(शंकर दयाल फ़र्हत)

पण्डित ब्रिज नारायण चकबस्त की रामायण में राम चन्द्र जी अपनी माता जी से जो वार्तालाप करते हैं वह पढ़ने वाले को विशेष रूप से प्रभावित करती है।

रुख़स्त हुआ वो बाप से लेकर ख़ुदा का नाम
राह-ए-वफ़ा की मंज़िल अव्वल हुई तमाम
मंज़ूर था जो माँ की ज़ियारत का इंतज़ाम
दामन से अशक पोंछ के दिल से किया कलाम
दिल को सँभालता हुआ आख़िर वो नौनिहाल
ख़ामोश माँ के पास गया सूरते ख़्याल
देखा तो एक दर में है बैठी वो ख़स्ता हाल
सकता सा हो गया है, ये है शिद्दते मलाल
तन में लहू का नाम नहीं, ज़र्द रंग है
गोया बशर नहीं कोई तस्वीरे संग है
रो कर कहा ख़मोश खड़े क्यों हो मेरी जां
मैं जानती हूँ जिस लिए आए हो तुम यहां
सबकी ख़ुशी यही है तू सहरा को हो रवां

लेकिन में अपने मुँह से हरगिज़ न कहूँगी हाँ
किस तरह बन में आँखों के तारे को भेज दूं
जोगी बना के राज दुलारे को भेज दूं

यह पूरी कविता ही दर्द की चट्टानों से टकराती प्रतीत होती है. इस प्रकार की शायरी हमें कर्बला को समर्पित मरसियों और नोहों में मिलती है. जो एक प्रकार से अवधी संस्कृति को दर्शाती है जिस से चकबस्त जुड़े हुए थे.

उर्दू शायरी में सरापा निगारी का विशेष स्थान है, मैं ने मुग़ल हरम पर अपने शोध में सरापा निगारी पर विशेष ध्यान दिया था जिस में महबूब की पूरी छवि की प्रशंशा की जाती है. द्वारका प्रसाद उफ़ुक़ लखनवी ने श्री राम की छवि को किस प्रकार प्रस्तुत किया है वह पढ़ते हुए भगवान श्री राम का एक अद्भुत चित्र उभर कर हमारे सामने आ जाता है. यहाँ शब्दों से चित्रकारी की गई प्रतीत होती है.

दिल को ख़ाहिश है कि रघुबर का सरापा हो बयां
खींचता है राम की तस्वीर यूं मलिके रवां
कान में कुंडल, मुकुट सर पर, तिलक ज़ेबे जबीं
माला बैजंती गले में, हाथ में तीरो कमां
बाल वो सहरा में बाँधा जिसका जूड़ा राम ने
मुए मुश्कीं वो जो बढ़ बढ़कर हुए मुए मेयां

रामायण की यह एक विवधता है कि हर वर्ष रामलीलाओं में इसका मंचन होता है. दर्शकों को भी पता होता है कि अगले दृश्य में क्या आने वाला है किन्तु इस पर भी इसका आकर्षण शताब्दी पर शताब्दीयां बीत जाने के बाद भी आज भी वैसा ही है जैसे अभी कल की ही बात हो. यही चमत्कार रामायण को विभिन्न भाषाओँ में जीवित किये हुए है. इस लेख में बीसवीं तथा इक्कीसवीं शताब्दी के रामायण से जुड़े बहुत से उर्दू कवियों आदि का उल्लेख नहीं हो पाया है. उर्दू साहित्य से जुड़े लोगों से चर्चा में मेहदी नज़मी, शाज़ तम्किनत, तालिब इलाहाबादी, पंडित दत्ता त्रिया कैफ़ी, शाद आरफ़ी, तिलोक चंद महरूम आदि बहुत से नाम आते हैं जिनका श्री राम और रामायण पर काम है. श्री राम और रामायण से उर्दू भाषा का चमत्कारिक रिश्ता अभी भी बना हुआ है और उर्दू के शायर आज भी अपनी शायरी में मरियादा पुरषोत्तम राम को अपनाने में पीछे नहीं हैं. मौलाना ज़फ़र अली ख़ान के शब्दों में;

नक्शे तहज़ीबे हनूद अब भी नुमायाँ है अगर
तो वो सीता से है लक्ष्मण से है राम से है

निष्कर्ष-

हर भाषा में रामायण मौजूद है. हर दौर और समय में बुद्धिजीवियों, लेखकों तथा कवियों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी के जीवन को अपनी लेखनी के माध्यम से जग जग में पहुंचाने का कार्य किया है. श्री राम को लेकर उर्दू भाषा में शायरी उर्दू भाषा के सुनहरी दौर से ही होती आ रही है और आज भी इस में कमी नहीं आई है. इस लेख में उर्दू शायरी को लेकर शोध किया गया है और इसमें रामायण और राम जी को लेकर उर्दू में उपस्थति पुस्तकों और ग्रंथों पर चर्चा की गयी है. इस शोध में शास्त्रीय साहित्य ही नहीं अपित दुर्लभ पांडुलिपियों पर भी चर्चा की गई है.

इस शोध पत्र के माध्यम से अपनी भारतीय विरासत और संस्कृति में रामचन्द्र जी के जीवन को लेकर उर्दू भाषा में जो कुछ लिखा गया है उसको खोजने की कोशिश हुई है. रामायण का अनुवाद फारसी तथा उर्दू में भी किया गया है. मुगल बादशाह अकबर ने अनुवाद के लिए एक संस्था बनाई थी जो दारुल तर्जुमा कहलाती थी. दारुल तर्जुमा में भी रामायण का अनुवाद हुआ है.

अंत में हम कह सकते हैं कि श्री रामचंद्र जी का जीवन हर दौर में हर धर्म समाज को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है. हर भाषा में चाहे वह मुगल काल ही क्यों न रहा हो या आज के समय में भी हर भाषा में और विशेष रूप से उर्दू भाषा में उन पर कई ग्रंथ मौजूद हैं. आज के शायर, कवि, लेखक तथा बुद्धिजीवी भी श्री रामचंद्र जी को केंद्र में रख कर अपनी रचनाएँ लिख रहे हैं. शोध

एक निरंतर कार्य है. केवल एक छोटे से शोधपत्र में रामचंद्र जी के महान व्यक्तित्व पर किए गए उर्दू भाषा के सभी कार्यों को समेटना मुश्किल है. इस लिए आगे आने वाले शोधार्थियों को इस कार्य को निरंतर जारी रखना चाहिए. इस महान कार्य में मेरे बाद आने वाले सभी शोधार्थियों को शुभकामनाएं है.

संदर्भ :

हनफ़ी, म. (n.d.) 2025). हिंदुस्तान उर्दू में. नई दिल्ली: anybook ।

ऐवाने उर्दू. (2008, नवंबर). नई दिल्ली: उर्दू अकादमी।

नूरानी, अ. ह. (n.d.) (1982). मुंशी नवल किशोर: हालात और ख़िदमात. दिल्ली: मकतबा सुबहे अदब।

मुहम्मद इक़बाल. (1993). बांगे दरा. अलीगढ़, एजुकेशनल बुक हाऊस।

अब्दुल क़ादिर बदायूँनी. (n.d.). मुन्तख़ब-उत-तवारीख. अलीगढ़: अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रेस।

तुलसीदास. (2022). द एपिक ऑफ़ राम (अनुवाद: फ़िलिप लुट्गेनडॉर्फ). कैम्ब्रिज, एम.ए.: मर्टी क्लासिकल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

जलील, र. (सम्पा.). (n.d.). रामाज़ लेगेसी इन पोएट्री एंड कल्चर: ए डॉक्यूमेंट ऑन लॉर्ड राम इन उर्दू, हिंदी एंड इंग्लिश वर्क्स. नई दिल्ली: हिंदुस्तानी आवाज़।

देसाई, न. क. (n.d.). द ग्लोरी ऑफ़ लॉर्ड श्री राम. अहमदाबाद: भारतीय विद्या भवन।

DW report link; **https://www.dw.com/ur/%D8%AC%DB%81%D8%A7%DA%BA-%D8%A7%D8%B1%D8%AF%D9%88-%D9%85%DB%8C%DA%BA-%D8%B1%D8%A7%D9%85%D8%A7%D8%A6%D9%86-%D9%BE%DA%91%DA%BE%DB%8C-%D8%AC%D8%A7%D8%AA%DB%8C-%DB%81%DB%92/a-41062294**

News Age Islam; **https://www.newageislam.com/urdu-section/mansooruddin-faridi/urdu-ramayana-composed-maulvi-%D8%A7%DB%8C%DA%A9-%D9%85%D9%88%D9%84%D9%88%DB%8C-%DA%A9%DB%8C-%D9%85%D9%86%D8%B8%D9%88%D9%85-%D8%A7%D8%B1%D8%AF%D9%88-%D8%B1%D8%A7%D9%85%D8%A7%D8%A6%D9%86/d/131442**

BBC; **https://www.bbc.com/urdu/multimedia/2015/10/151021_ramlila_india_urdu_nj**

Hindustan Express; **https://www.dailyhindustanexpress.com/exhibition-of-rare-manuscripts-of-balmiki-ramayana-at-rampur-raza-library/**